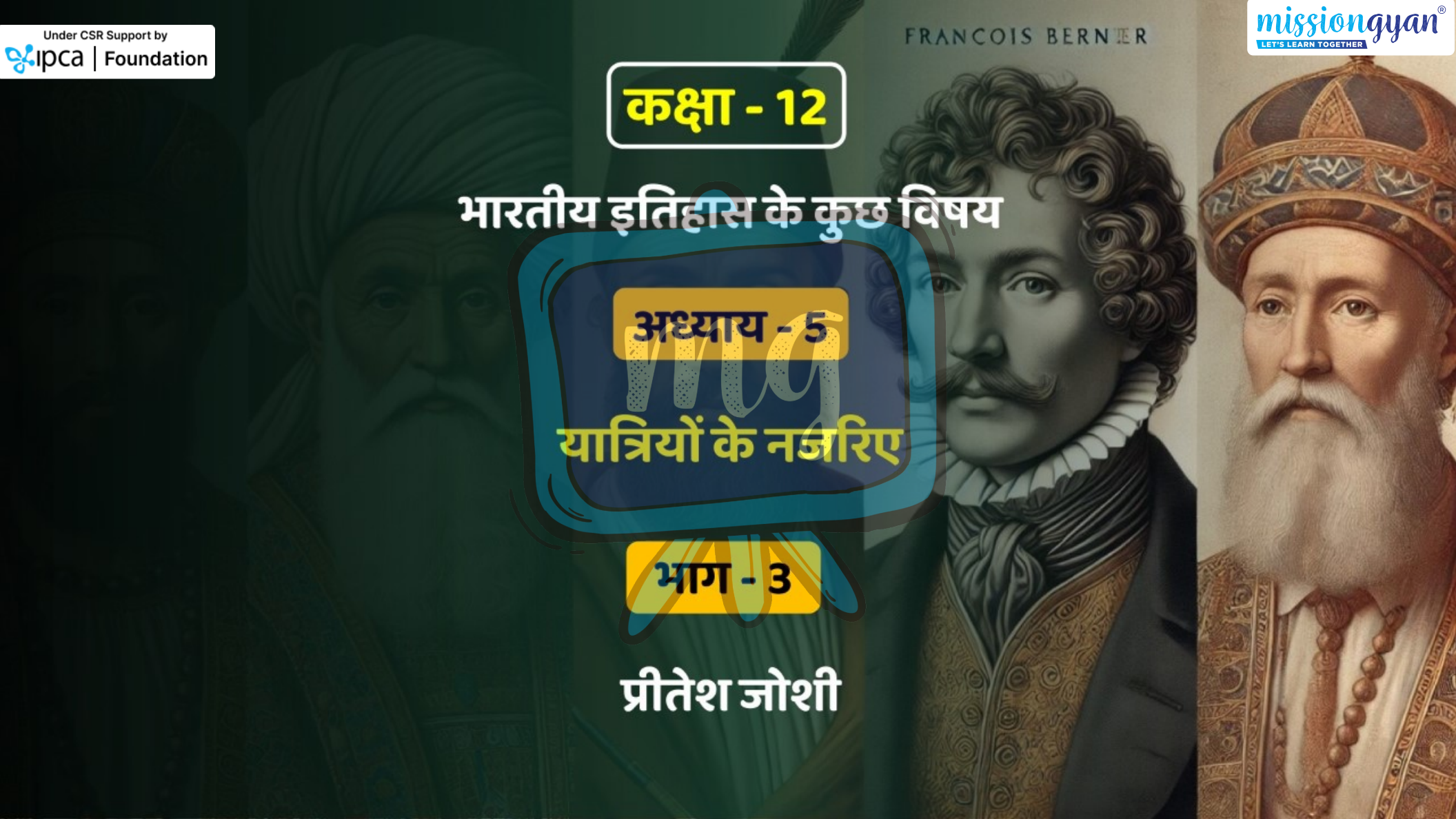
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 5

यात्रियों के नजरिए

भाग - 3

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

14वीं मो० MBT



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सिंध → मुलतान → (दिल्ली) → MBT

Q. इब्नबतूता को किस पद पर नियुक्त किया गया था?

a) काजी
b) बख्शी
c) कोतवाल
d) दीवान

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जायतून
चीन

Q इब्नबतूता कि किताब और भारत आगमन का वर्ष?

a) स्यी यू की, 1347

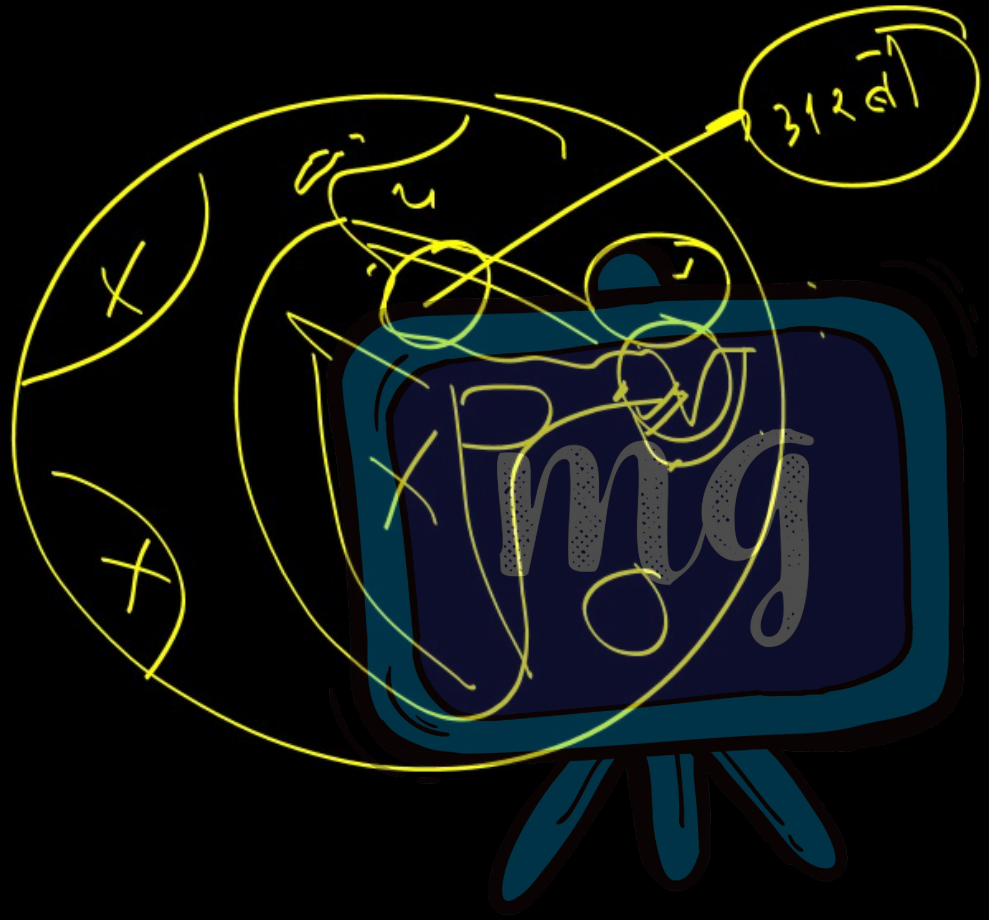
b) किताब उल हिन्द, 947

c) रिहला, 1333

d) कोई नही

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

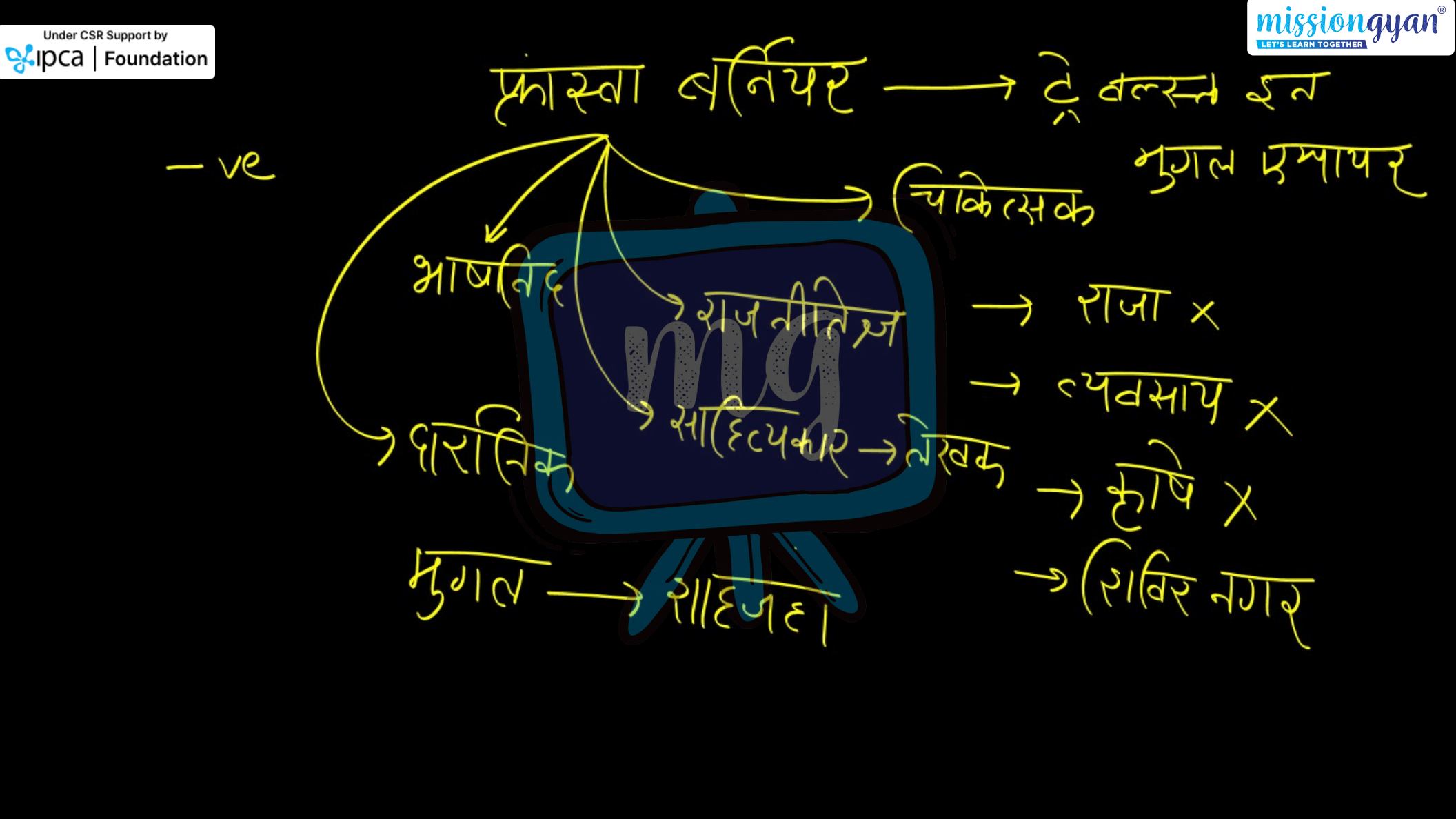
11 → अल
14 → इल्न
17 → फ्रान्वा
1498 बर्नियर
केरल

यूरोपीय यात्री

- लगभग 1500 ई. में पुर्तगालियों का भारत में आगमन हुआ (1498 ई. में वास्को डी गामा कालीकट पहुंचा)
- इन यात्रियों में से कई लोगों ने भारतीय रीति-रिवाजों तथा धार्मिक प्रथाओं के विषय में विस्तृत वृत्तान्त लिखें।
- जेसुइट रॉबर्टो नोविली ने तो भारतीय ग्रंथों का यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद भी किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

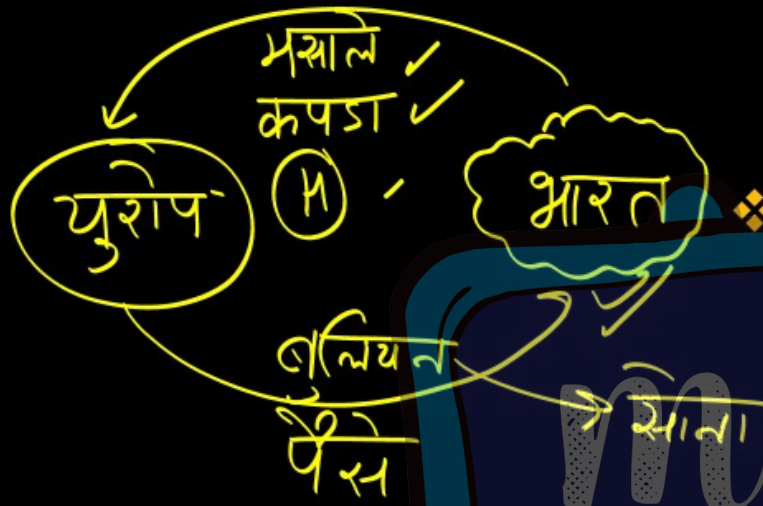
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

→ बंदरगाह
→ श्रेणी

- सबसे प्रसिद्ध यूरोपीय लेखकों में दुआर्ते बरबोसा का नाम है जिन्होंने दक्षिण भारत में व्यापार व समाज का वर्णन किया।
- 1600 ई. के बाद बड़ी संख्या में डच, अंग्रेज व फ्रांसीसी यात्री भारत आये।
- फ्रांसीसी जौहरी ज्यों-बैप्टिस्ट तैवर्नियर ने कम से कम 6 बार भारत की यात्रा की। वह भारत की व्यापारिक स्थिति से बहुत प्रभावित था तथा उसने भारत की तुलना ईरान व ऑटोमन साम्राज्य से की है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



❖ इटालवी चिकित्सक मनूकी यूरोप वापस नहीं गये व भारत में ही बस गये।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

फ्रांस्वा बर्नियर

- फ्रांस का निवासी फ्रांस्वा बर्नियर एक चिकित्सक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक तथा एक इतिहासकार थे।
- वह मुगल साम्राज्य में अवसरों की तलाश में भारत आया।
- 1656 ई. से 1668 ई. तक मुगल दरबार से नजदीकी से जुड़ा रहा।
- सम्राट शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र द्वारा शिकोह के चिकित्सक के रूप में कार्य किया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

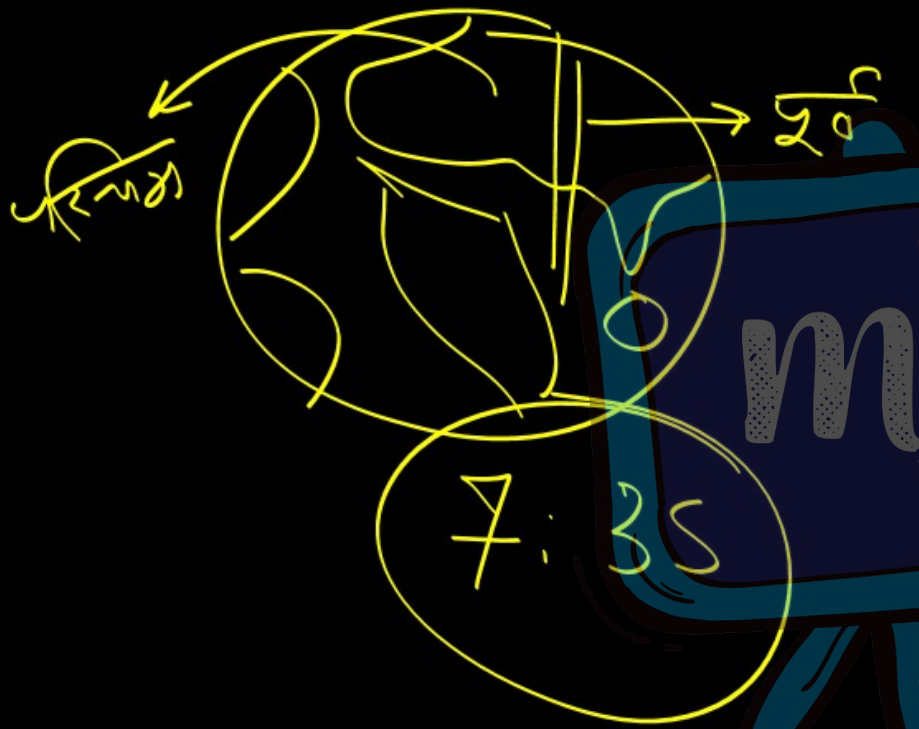
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. 17वी शताब्दी तक आए हुए युरोपीय यात्रियों के नाम लिखे? ① ②

- बाद में आर्मीनियाई अमीर दानिशयंद खान के साथ बुद्धिजीवी व दार्शनिक के रूप में कार्य किया।
- पुस्तक :- ट्रेवल्स इन मुगल एम्पायर

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

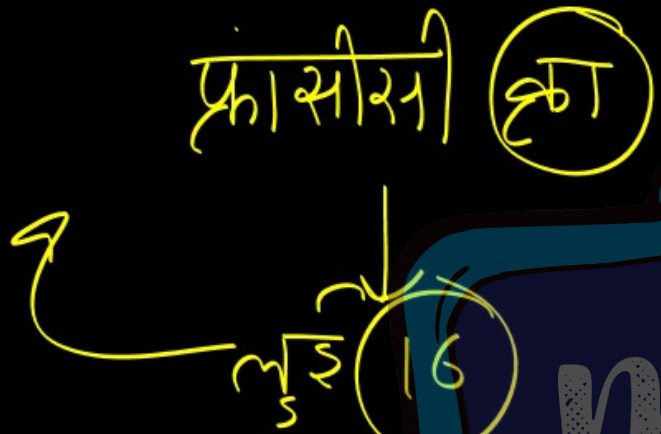


"पूर्व" और "पश्चिम" की तुलना

- बर्नियर ने देश के कई भागों की यात्रा की एवं उसे अपने वर्णन में शामिल किया।
- भारतीय प्रदेशों के वर्णन की तुलना वह यूरोपीय स्थिति से करता था।
- लगभग प्रत्येक दृष्टांत/वर्णन में उसने भारतीय विकास की स्थिति को यूरोप के मुकाबले दयनीय/कमजोर बताया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- हालांकि उसका वर्णन/आंकलन सदैव सटीक नहीं था।
- बर्नियर के मुगल सेना के साथ कई यात्राएँ की। कश्मीर कूच के वर्णन को उसने अपने वृत्तान्त में शामिल किया है।
- बर्नियर ने अपनी प्रमुख कृति को फ्रांस के शासक लुई चौदह को समर्पित किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- बर्नियर के कार्यों का फ्रांस में 1670-71 में प्रकाशन हुआ था।
- अगले 5 वर्षों में अंग्रेजी, डच, जर्मन तथा इतालवी भाषा में अनुवाद हो गया।
- 1670 से 1725 में मध्य बर्नियर का वृत्तान्त आठ (8) बार पुनर्मुद्रित हो चुका तथा 1684 तक तीन (3) बार अंग्रेजी में पुनर्मुद्रित हुआ था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1498 → वास्को डी गामा।

Travels in M.E

पुर्तगाल → फ्रांस्वा बर्नियर → इंग्लैण्ड, अंग्रेजी भारत मुगल दरबार

(फ्रांस)

चिकित्सक → दारा शिकोह

लुई 14

पुंछ कश्मीर

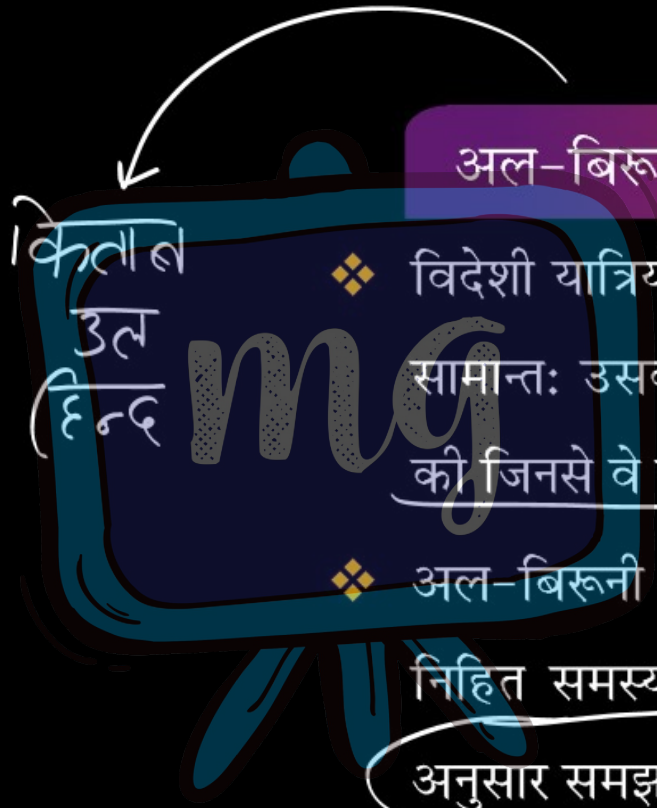
पूर्व || पश्चिम

✗ ✓

-ve

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



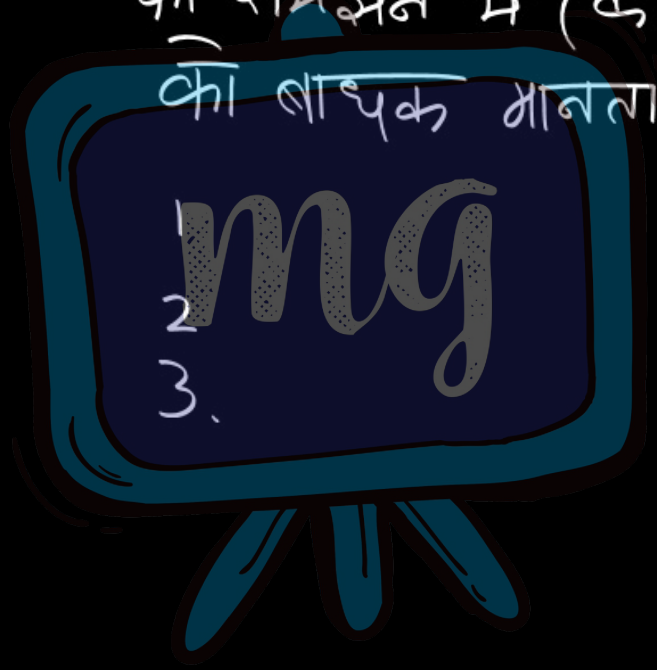
अल-बिरूनी तथा संस्कृतवादी परम्परा

- विदेशी यात्रियों ने उपमहाद्वीप में जो भी देखा, सामान्तः उसकी तुलना उन्होंने उन प्रथाओं से की जिनसे वे परिचित थे।
- अल-बिरूनी अपने लिए निर्धारित उद्देश्य में निहित समस्याओं से परिचित था जो उसके अनुसार समझ में बाधक तत्व थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. अलबरूनी भारतीय संस्कृति को समझने मे किन तत्वो को बाधक मानता था।?



1.
2.
3.

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

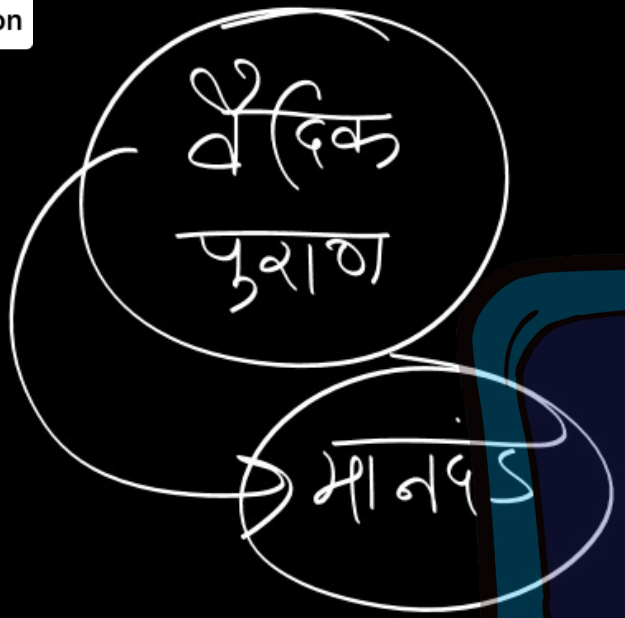
→ अरबी
→ फारसी

1. पहला अवरोध भाषा था। उसके अनुसार संस्कृत, अरबी व फारसी से इतनी भिन्न थी कि विचारों व सिद्धांतों को एक भाषा से दूसरी में अनुवादित करना आसान नहीं था।
2. दूसरा अवरोध धार्मिक अवस्था और प्रथा में भिन्नता थी।
3. तीसरा अवरोध अभिमान था।

❖ अल-बिरूनी समस्याओं से परिचित होते हुए भी लगभग पूरी तरह से ब्राह्मणों द्वारा रचित कृतियों पर आश्रित रहा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- अल-बिरूनी ने भारतीय समाज को समझने के लिए अक्सर वेदों, पुराणों, भगवत्गीता, पतंजलि की कृतियों तथा मनुस्मृति आदि से अंश उदधृत किए।